तृतीय पाठ

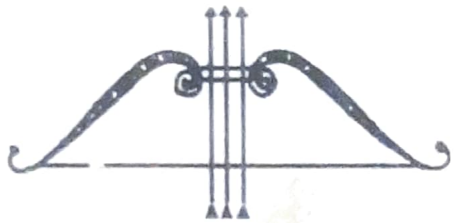

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
पहरेदार सब चौकस रहियो । मन की इच्छा मुझको कहियो ।।
अपने लोक में कोई आवे । दखल नींद में जो पहुंचावे ।।
तुरन्त हमारे पास में आईयो । उसको इज्जत के संग लाइयो ।।
हर कोई नहीं घुसने पावे । बाशक जी सबको समझावे ।।
रात सुरीली चांदनी चमके । चन्द्र मणि की किरणां दमके ।।
अमृत कुण्ड के सख्त है पहरा । शहर के चारों ओर ही गहरा ।।
दरवाजे जो चार बनाये । उन पर पहरे खूब लगाये ।।
नाग देव का नगर निराला । जिसमें शिवशंकर का शिवाला ।।

दोहा - आधी रात थी ढल गई, नींद पहर के बीच ।
फूल सुगन्धी छा रही, जावे हर कोई रीझ ।। क ।।
सन्त साधु को रुप धर, ब्रह्मा देव अवतार ।
आया चलकर बड़ी दुर से, सुन रहे पहरेदार ।। ५८ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
नाग देव एक पहरेदारी । उस साधू से अर्ज गुजारी ।।
रात्रि समय तुम क्या करते हो । हे योगी तुम कहाँ रहते हो ।।
शहर में घुसना सख्त मना है । बाशक जी का यही कहना है ।।
उनसे मिलना हो तो पधारो । वरना जो कहते हो पुकारो ।।
साधु ने एक सुझ बिचारी । सत्य है कहना पहरेदारी ।।
एक बात तुम मुझको बताओ । साँची कहना बचन सुनाओ ।।
नाग लोग में कोई प्राणी । गोर बदन है ओर बलवानी ।।
आया है या नहीं आया है । इसका भेद नहीं पाया है ।।
उसके चार और हैं भाई । बहुत तरसते दरशन तांई ।।
भेद लगाने मैं आया हूँ । दूर बाट भी थक पाया हूँ ।।
पहरेदारी मन में बिचारी । ये साधू कोई है छली हारी ।।
विष से मरा मेहमान हमारा । उसी वंश का है छल गारा ।।

दोहा - पहरेदार भर क्रोध में, बात सुना दई एक ।
बाशाक से मिलना तुम्हें, चलो शहर को देख ।। क ।।
वरना यहाँ से चल देवो, मैं नहीं जानूं और ।
कौन बली यहाँ पर आया, कैसा मचाया शोर ।। ५९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बाशक पास चलो पहरेदारी । सब इच्छा हो पूर्ण हमारी ।।
आगे आगे पहरेदारी । पीछे साधू वीणा धारी ।।
बाशक जी ने आवत देवा । नारद जैसी झलक की रेखा ।।
दूर से दौड़ प्रणाम किया है । नारद ने आशीष दिया है ।।
आओ आओ नारद देवा । हुक्म करो मेरे लायक सेवा ।।
हम थारे चरणों के पुजारी । रात्रि समय क्यों सुरत विचारी ।।
क्या पूछेंगे मन की बतियाँ । खोजत ही कटती हैं रतियाँ ।।
एक रोज यों ही मन में धारी । बुला रहे थे कृष्ण मुरारी ।।
पहुँच गया मैं उठके सवारी । हस्तिनापुर में मिले पुजारी ।।
पाण्डुपुत्र थे सोच में भारी । भाई था उनका बलधारी ।।
कौरव ने कोई कपट किया था । भोजन मांहि जहर दिया था ।।
पता नहीं उस बलवानी का । देख दुःख वहाँ सब प्राणी का ।।
भेद लगाने मैं आया हूँ । कहो सुना है यहां पाया हूँ ।।
अहो भाग्य जो आप पधारे । कारज सिद्ध हुए अब सारे ।।
पहले आओ अमृत पीओ । जग की भलाई खातिर जिओ ।।
सेवक अमृत संग और मेवा । लेकर आये पीवो देवा ।।
अब इक बात हमारी अर्जी । हाँ जो करो तो थारी मर्जी ।।

दोहा - नारद जी कहने लगे, अमृत प्याला पीव ।
सब की इच्छा पूर्ण होती, देव प्राणी क्या जीव ।। क ।।
हे बाशक क्या बात है, भेद बताओ खोल ।
मैं तो अति प्रसन्न हूँ तुम पर, कर लो चाहे कोल ।। ६० ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
एक रोज श्री अम्बे भवानी । पार्वती जी कमला रानी ।।
नाग लोक में पधारी माता । हे मुनि देव मैं सत्य सुनाता ।।
अहिलवती बेटी है तुम्हारी । मेरी ममता की जो दुलारी ।।
शिव की पुजारन अन्तर ध्यानी । नित्य नियम की चतुर सुज्ञानी ।।
अन होनी ने कदम बढ़ाये । शिव पर बासी पुष्प चढाये ।।
श्राप दे दिया अम्बे भवानी । मरा पति तुम्हें मिलेगा रानी ।।
पाण्डु वंश का राज दुलारा । बन गया वो जीवन का सहारा ।।
जीवित हो गया यहाँ पे आकर । महलां सोवे देखो जाकर ।।
हमने उससे विनती गुजारी । वो करता है साफ इन्कारी ।।
तुमरी बेटी जब जागेगी । पति बिना जीवन त्यागेगी ।।
उसने समझ लिया है सहारा । हे मुनिदेव कहो क्या विचारा ।।

दोहा - अर्जी तुमरी सुन लई, जायज राखी माँग ।
तुमरे कारण अभी रचूंगा, एक अनोखा साँग ।। क ।।
मैं समझाऊँगा उसे, नहीं होगा इन्कार ।
अहिलवती से जाकर कह दो, जल्द करे शृंगार ।। ६१ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
भोर हो गई सूरज चमका । पीला बादल दम-दम दमका ।।
भीम उठा और नींद है त्यागी । बलवानी और है बड़ भागी ।।

भोर नियम के कारज कीना । शिव के चरणामृत को लीना ।।
नारद जी भी सन्मुख आये । मधुर वीणा झनकार बजाये ।।
भीम देखकर राजी हो गये । जो भय मन में सारा खो गये ।।
हाथ जोड़ प्रणाम करी है । फिर एक उँची आह भरी है ।।
मत घबराओ कुन्ती लाला । तुम को खोजत पड़ गये छाला ।।
देख लिये मैंने जग सारा । मिला नहीं कुन्ती का प्यारा ।।
तुमरे भाई चिन्ता करते । सुन-सुन अफवा मन में डरते ।।
लेकिन चिन्ता सारी त्यागो । भूल की नींद से जल्दी जागो ।।
अम्बे भवानी के बचन पुगाओ । नाग लोक में खुशीयाँ जगाओ ।।
वरना श्राप तुम्हीं पर आवे । फिर बचना मुश्किल हो जावे ।।
तुम जो कहोगे वो ही होगा । तुरन्त बताओ हमरे जोगा ।।

दोहा - माता की आज्ञा बिना, कैसे करुँ मंजूर ।
तुमरी आज्ञा शिरोधार्य है, करो मेरा भय दूर ।। क ।।
भाई जी कहीं रुठ कर, कह दे खारी बात ।
इसका उत्तर तुम ही दे दो, तुम भी हमारे नाथ ।। ६२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
नारद जी ने बात बताई । भेद नीति सारी बतलाई ।।
तुमरी माता और भाई को । भेद देऊँ तुमरी पाई को ।।
उनकी बात मेरे पर छोड़ो । तुम तो वर के वस्तर ओढ़ो ।।
जो कछु कहना मुझसे कहेंगे । हम सब अपने निज पे सहेंगे ।।
तुमरा कोई कसुर न गावे । सब कुछ भेदी हम को बतावे ।।
मैं जाकर सब हाल कहूँगा । विवाह तलक मैं यहीं रहूँगा ।।

फिर तुम मृत्यु लोक में आना । अहिलवती को संग में लाना ।।
बाग में फूल खिले भरपूर । पंचवटी से थोड़ी दूर ।।
वहाँ शिवालय अति सुहाना । वहां पे रहना तुम बलवाना ।।
अहिलवती वहाँ पूजा करेगी । शिव के कलश में जल भी भरेगी ।।
जब इच्छा हो घर को जाना । माता भाई के दर्शन पाना ।।

दोहा - आज्ञा सब मन्जूर है, सुनो देव मुनि राज ।
बर के बस्त्र और सेवरा, जल्द मंगाओ ताज ।। क ।।
अर्धांगिनी अहिलवती, मुझको है मन्जूर ।
तुमरी आज्ञा ही जोऊ था, छाई खुशी भरपूर ।। ६३ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
नाग लोग में खुशियाँ छाई । घर घर मांही गाये बधाई ।।
सखियां सारी बाग में आई । अहिलवती को संग में लाई ।।
श्रृंगार पेटियां सजी हुई हैं । बाग बीच सब रखी हुई हैं ।।
नारद भीम महल में आये । बाशक जी के अति मन भाये ।।
भांति भांति की बनी मिठाई । कंचन थाल में धरी सजाई ।।
नारद भीम जी भोजन पायें । बाशक हाथ से पंखा ढुलायें ।।
सेवक खड़े करे मनवारी । नाग कन्या दुल्हन की तेयारी ।।
सखियां अहिला से बतलावें । हाथ में मेंहदी मोहनी रचावें ।।
माथे बिन्दी मांग भरी है । प्रकृति हो गई हरी हरी है ।।
बाल बाल में मोती पोये । हार अलोका मन पर सोहे ।।
श्रृंगार सजाया सुन्दर भारी । कर रहे नारद मण्डप त्यारी ।।

दोहा - नाग लोक में बहार थी, छवि है अपरम्पार ।
बजे शहनाई मोहनी, घर घर मंगलाचार ।। क ।।
नाग देव सब मगन होय, फिरत खुशी में झूल ।
सब ने पहने हार गले में, तरह तरह के फूल ।।

भजन

(तर्ज - कामण)

भीमबली तो अहिलवती के, संग में ब्याह रचावै राज ।
नाग लोग में खुशियाँ छाई, सब कोई मंगल गावै राज ।।

अहिलवती की सारी सखियाँ, दुल्हन इसे बनावै राज,
बाल बाल में मोती पोवे, हार-शृंगार सजावै राज ।।

शादी की शहनाई बाजै, ढोल नगाड़ा बाजे राज,
नाग-नागिनी नाग लोक में खुश होकर के नाचै राज ।।

नारदी जी तो मंत्र उच्चारै, देव पुष्प बरसावै राज,
अग्नि की साक्षी में पावन, गठ बन्धन बँध जावै राज ।।

रानी के संग बाशक राजा, कन्या दान करावै राज,
आशीष देवै नव-दम्पति को, अमृत खूब पिलावै राज ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मण्डप सजाके वेदी रचाई । सब सामग्री नियम सजाई ।।
सखियां गीत सुनहरा गावें । अहिलवती को दुल्हन बनावें ।।
मण्डप ऊपर भीम पधारे । नारद जी विधि मन्त्र उच्चारे ।।
अग्नि प्रगट हुई एक पल में । साक्षी बनने नभ जल थल में ।।
बजी शहनाई मोहनी बानी । ढोल नगारे स्वर सुरज्ञानी ।।
सखियों के संग कन्या आई । भीम के बामाङ्ग बिठाई ।।

नाग मणि की किरण सवाई । अहिला के बालों में सजाई ।।
चन्द्र किरण से मोहनी छाई । नारदी जी के अति मन भाई ।।
विधि बिधान से मन्त्र उच्चारे । नाग देव जयकार पुकारे ।।
बाशक अर्धांगिनि संग आये । कन्यादान का संकल्प कराये ।।

दोहा - अग्नि साक्षी लेयकर, भीम प्रतिज्ञा धार ।
नारद ने हथलेवो कियो, रच्यो नयो संसार ।। क ।।
सात परिक्रमा भर दई, अग्नि के चारों ओर ।
अहिलवती पति चरण को, धोय हाथ को जोर ।। ६५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
नाग देव सब फूल चढ़ावे । हुक्म होय वहीं कदम बढ़ावें ।।
नाग कन्याएं गीत गा रहीं । मन को मोहनी लहर छा रहीं ।।
मण्डप कारज सुन्दर भारी । अहिला भीम की जोड़ी प्यारी ।।
नाग कन्याएँ ले बलिहारी । मन में करतीं बात विचारी ।।
पति होवे तो हो बलधारी । वरना रहना चाहिए कुँवारी ।।
नाग कन्याएँ थाल सजावें । पायल की झंकार बजावें ।।
थाल में फूल और दीप सारथी । वर कन्यां की करें आरती ।।
गठ जोड़े संग महल पधारो । सखियाँ कहैं धन भाग हमारो ।।
अहिला भीम महल में आये । चन्द्र सूरज भी देखन छाये ।।
देव लोक में बजी शहनाई । बाशक कन्या हुई पराई ।।
देवन ने आ फूल बरसाये । भांति भांति के शंख बजावे ।।
शिव संग पार्वती बतलावें । महादेव मन में हर्षावें ।।
अहिला हमारी लाड़ दुलारी । सुनो पार्वती बात हमारी ।।

इसकी कोख से देव अवतारी । प्रगट होवेगा महा बलधारी ।।
शिव पार्वती बात बिचारे । नारदी जी बाशक को पुकारे ।।
सुनो बाशक अब बात हमारी । हमरी चलने की है तैयारी ।।

दोहा - हस्तिनापुर में जाय कर, खबर करूँ सब कोय ।
तुमरी इच्छा पूर्ण हो गई, और कहो कछू होय ।। क ।।
भीम कहे वैसा करो, तुम स्वतन्त्र हुए आज ।
हमने सब समझा दिया, भीम को सारा काज ।। ६६ ।।

इतना कह कर नारद जी नारायण नारायण बोल, वीणा के मधुर स्वर में मगन होय हस्तिनापुर की ओर चल दिये रास्ते में उनको श्री कृष्ण भगवान मिले ।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
कहो नारद जी कहाँ से आये । भीम बली का भेद भी लाये ।।
आप निराशा लेकर आ रहे । आपके चेहरे के भाव बता रहे ।।
कहाँ कहाँ पहुँचे समझाओ । रोली तिलक का भेद बताओ ।।
किसने तिलक लगाया देवा । किस यजमान ने कर दी सेवा ।।
नारद जी ने दण्डवत कीनी । मुरली की बलिहारी लीनी ।।
बोले हे प्रभु अन्तर्यामी । सबके प्राणों के तुम स्वामी ।।
जान बूझते हमसे कहते । कौन जीव जो आप से छुपते ।।
भोला बनकर भरम फैलावो । घट घट वासी तुम कहलावो ।।
कोई छुपा नहीं आपसे प्राणी । अज्ञानी और बुद्धिमानी ।।
नारद जी का भरम भगाया । चतुर्भुज रुप धरा सुहाया ।।
अन्तर्यामी बचन सुनाये । चक्र सुदर्शन उंगली धाये ।।
हे मुनि राज ब्रह्म के ज्ञानी । नाग लोक जब गई भवानी ।।

जो श्राप अहिला ने पायो । भीमसेन के समझ न आयो ।।
आप को भेजा बात सुधारी । वरना अहिला रहती कुँवारी ।।
शिव भोले जी मगन होय कर । बाशक की सेवा में खोय कर ।।
दीनो आशीष भविष्य विचारा । कलियुग जीव के लिए सहारा ।।
बाशक पुत्री है महारानी । गोदी से प्रगटे देव बड़ दानी ।।
जन्मे लाल बल में बल धारी । प्राप्त करे छबि मेरी सारी ।।
रुप चतुर्भुज मेरी परछाई । देव रुप शक्ति शकलाई ।।
कलियुग में अवतार धरेगी । प्राणी हृदय निज धर्म भरेगी ।।
अभी आप हस्तिनापुर जाओ । कुन्ती बुआ को धीर बंधाओ ।।
इतना कहकर अदृश्य हो गये । नारद जी वीणा में खो गये ।।

दोहा - नाग लोग खुशियां लिये, होता रहा गुलजार ।
भीम अहिला आनन्दित हो, कर रहे बात बिचार ।। क ।।
मृत्यु लोक में जायेंगे, उदय होत प्रभात ।
वहाँ रहेंगे कुछ दिन, फिर सौ बात सो बात ।। ६७ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिला मन्द मन्द मुस्काई । चरणों उपर नजर टिकाई ।।
आपकी आज्ञा अब मानूंगी । आज्ञा ही प्रभु को जानूंगी ।।
हुक्म सभी हर पल में निभाऊँ । कहो तो दास दासी ले आऊँ ।।
भीम के सूझ में जल्दी आई । तुमरी इच्छा सब से सवाई ।।
चार दूत तुम संग में ले लो । निज वंश तुम कुल के ले लो ।।
और कछु हम नहीं ले जावें । बाशक जी को भेद बतावें ।।
चले शीघ्र ही कर प्रस्थाना । बलधारी कहे अल मस्ताना ।।

अहिला पिता के पास में आई । पति देव की बात बताई ।।
निज सेवक दिये चार सिपाही । इन जैसा कोई बल में नाहीं ।।
मारे डंक पहाड़ उजाड़े । बैरी को तो जड़ से उखाडे ।।
हाथ जोड़ अहिला के आगे । खड़े पुकारें भाग हैं जागे ।।
पति चरणों में दौड़ के आई । संग में चार सिपाही लाई ।।
चलो देव मैं संग तुम्हारे । दाना पानी जहां हमारे ।।

अहिलवती और भीम का मृत्यु लोक में पहुंचना

दोहा - पंचवटी के पास ही, नारद बतायो स्थान ।
ढूँढ लियो है भीमबली ने सुन्दर अति महान ।।
शिव को शिवालय मोहनो, छाई छवि बहार ।
अहिलवती मन भावनो, हरयो भरयो गुलजार ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
पास में झरना झर झर बहता । स्वर में शिव शिव हर हर कहता ।।
जल धारा उँचे से गिरती । भंवरी खाती लहरें फिरती ।।
बियावान जंगल अति प्यारा । पंख पखेरु का ये सहारा ।।
एक तालाब बना है सुहाना । जल झरने का आना जाना ।।
झरने का जल इसमें आता । दूजे किनारे से बह जाता ।।
चारों तरफ हैं पहाड घनेरे । जीव जन्तु करते हैं बसेरे ।।
भीम अहिलवती दोनों आये । झरने पास में डेरा लगाये ।।
मन में उपजी करते बतियां । क्रीडा करते कटती रतियां ।।
अहिला नियम से भोर होवत ही । शिव पूजा में ध्यान जोवत ही ।।
झरने का जल कलश चढ़ावे । शिव स्तुति में स्वर को बढ़ावे ।।
सेवक चार हैं पहरेदारी । जो बल में है अति बलधारी ।।

अहिलवती का कहना करते । महा काल से ये नहीं डरते ।।
पुष्प सुगन्धित बड़े महकते । तितली भंवरे पक्षी चहकते ।।

दोहा - एक रात बली भीम संग, अहिला बात बताय ।
इतने में एक उँची मोटी, गई राक्षसी आय ।। क ।।
पत्थर फेंक के पेड़ उखाड़े, गर्जन करती जोर ।
गूंज उठी जंगल दहलाया, किलकारी का शोर ।। ६९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
भीम ने देख है कोई जंगली । नारी नहीं यह कोई पगली ।।
इसको मौत खींच लाई है । हमरे सन्मुख चिल्लायी है ।।
बोली अहिला विनती करके । पति चरणों में उंगली धरके ।।
ये कोई राक्षसी है अभिमानी । मांसाहारी पापिनी दानी ।।
सेवकों ने आ अर्ज सुनाई । क्या आज्ञा है म्हारी बाई ।।
अहिला बोली सत्य धर्म पर । मर्यादा और नीति कर्म पर ।।
नारी पर नहीं हाथ उठाओ । अपनी अपनी जगह पे जाओ ।।
नर की भक्षणी पास में आवे । भीम के क्रोध धनेरा छावे ।।
पास में आई वो अभिमानी । बोली गरज के क्रोध की बानी ।।
बहुत दिनों से भूख सतावे । मिल गया भोजन मन ललचावे ।।
नर और नारी संग में पाये । राक्षसी ने फिर कदम बढ़ाये ।।
भीम उठा फिर गर्जना करके । रोक लिया अहिला ने पकड़ के ।।

दोहा - अहिला चल दई सामने, दोनों भुजा फैलाय ।
क्रोध में और राक्षसी मचली, जोर जोर चिल्लाय ।। क ।।
अहिलावती ने आय कर, पकड़े उसके केश ।
पटक पछाड़ी धरणी ऊपर, करदी भेष कुभेष ।। ७० ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
राक्षसी ने भागन की सोची । अहिला ने गरदन को दबोची ।।
भींची गरदन और चिल्लाई । छाती ऊपर लात जमाई ।।
पकड़े केश घसीट के लाई । पति चरणों में लाय गिराई ।।
हुक्म करो मेरे देव दयालु । क्या करना है इसका कृपालु ।।
रोवे राक्षसी मुझे छोड़ दो । फिर नहीं आऊँ पीठ मोड़ दो ।।
भीम ने अपने बचन सुनाये । देखो अब कितनी पछताये ।।
माफी देवो अब मेरी रानी । बख्शो इसकी अब जिन्दगानी ।।
अहिला बोली लात जमाकर । भाग यहाँ से मूँह को छिपाकर ।।
चली राक्षसी दौड़ती जावे । मुड़ मुड़ हाथ को जोड़ती जावे ।।
ये नारी कोई है बलधारी । भागती सोचती करती बिचारी ।।

दोहा - भोर हुयी मन मोहनी, उठे नींद को त्याग ।
अहिला आय शिवालय पहुँची, गावे मधुरी राग ।। क ।।
भीम भोर के नित कर्म, कर रहे मगन में होय ।
झरने के जल स्नान करे, उठे हैं जब भी सोय ।। ७१ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
भीम ने शिव के पुष्प चढ़ाये । अहिलवती को भेद बताये ।।
अब मैं हस्तिनापुर जाऊँगा । याद करोगी जब आऊँगा ।।
ये है बचन हमारी रानी । आय मिलूंगा जब मन मानी ।।
अहिलवती ने हाथ बढ़ाये । पति चरणों पर पुष्प चढ़ाये ।।
बोली मन्द मन्द मुस्काकर । तुम नहीं आओगे फिर जाकर ।।
आश औलाद की हुई निशानी । दर्शन कर लेते बलवानी ।।

कन्या बालक जो भी होवे । याद तुम्हारी पाकर रोवे ।।
कैसे धीर बंधाऊँ देवा । कुछ दिन और भी करती सेवा ।।
बोले भीम मुग्ध हो बानी । निश्चय आऊँगा मेरी रानी ।।
बालक होगा अति बलवानी । सुन्दर बुद्धि चतुर सुजानी ।।
शगुन हमारे सच्चे होते । ठोस सबल और पक्के होते ।।
कह कर चले भीम बलवानी । हस्तिनापुर की राह पहचानी ।।
उब उब कर अहिलवती देखे । मुड़ मुड़ करके भीम भी देखे ।।

दोहा - सेवक चारों पास में, अहिला खड़ी उदास ।
ठण्डी आहें हृदय उछले, फिर भी मिलन की आस ।। क ।।
नैना आंसू पोंछ कर, धार लियो है धीर ।
जब भी आवें इच्छा होवे, जन्म जन्म को सीर ।। ७२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
घोरी राक्षसी जो अभी आई । अपने पति को बात बताई ।।
इस बन में इक नारी आई । संग में एक पुरुष को लाई ।।
पुरुष जा रहा छोड़ अकेली । भीम की सूरत राक्षस देखली ।।
यही पुरुष है इसका साथी । और नहीं कोई दूजा नाती ।।
डूंडा राक्षस था अभिमानी । घोरी राक्षसी जिसकी रानी ।।
इस बन के ये दोनों पायक । और दूसरा कोई न लायक ।।
अहिलवती शिव मन्दिर आयी । फुल चढ़ावे भीम के तांही ।।
हे शिवशंकर हे त्रिपुरारी । महादेव भोले भण्डारी ।।
पति मेरे को जल्द मिलाओ । इसी शिवालय फिर बुलवाओ ।।
खड़े सेवक हैं पहरेदारी । नाग लोक के ये फणधारी ।।

दोहा - बाशक पहूँचे ढूँढते, आये बन के माय ।
बशीभूत हो प्रेम के मांही, चल कर आये पांव ।। क ।।
सेवक ने पहचान कर, करी प्रणाम कर जोड़ ।
आओ पधारो नागदेव जी, अहिला शिवालय ओर ।। ७३ ।।

भीम बली के चले जाने के बाद अहिलवती उदास हो जाती है और विरह का गीत गाती है -

।। भजन ।।

(तर्ज - कागलिया म्हानै ना सतावो जी)

पुरवईया संदेशा ले जावो जी,
मेरे प्रीतम जी गये है परदेश, जा कहियो, अहिला याद करै ।।टेर।।

जब से गये है, खबर न आई, दिल भर आया, आती रुलाई,
मुझे आकर, धीर बँधाओ जी, मेरे प्रीतम.... ।।१।।

देना संदेशा, उनकी ये दासी दरश दिवानी, दर्श की प्यासी,
मुझे आकर, दर्श दिखाओ जी, मेरे प्रीतम.... ।।२।।

पाण्डव कुल में जा, उनको सुनाना, हालत मेरी ये उनको बताना,
मुझे आकर, संग ले जाओ जी, मेरे प्रीतम.... ।।३।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
सेवक जोर आवाज पुकारें । देखी अहिला कौन पधारें ।।
पिता को देख अहिला भागी । शिव की लगन से फौरन जागी ।।
आकर लिपट गई भर के बथियां । बोली राजी होंगी सब सखियाँ ।।
मुझको याद करत हो नाहीं । भेजूं संदेश सखियों के ताहीं ।।
मेरी माता क्यों नहीं आई । क्यों नहीं लाये सुध बिसराई ।।
बोले बाशक धीरज धर कर । आँखो में आँसू को भर कर ।।
सखियां सारी मौज उड़ावें । तुमरी याद को नहीं भुलावें ।।

माता तुमको याद करत हैं । मिलन के ताहीं आह भरत हैं ।।
मैं तो अकेला चलकर आया । संग किसी को मैं नहीं लाया ।।
हमरे जँवाई कहाँ गये हैं । अहिला के तब आंसू बहे हैं ।।

दोहा - चले गये वो छेड़ कर, अपने निज स्थान ।
मेरी रक्षा खातिर छोड़े, महादेव भगवान ।।
फिर कब चलकर आयेंगे, कीन्हो कोल करार ।
हमतो यहीं रहेंगे बाबुल, हमरो ये ही संसार ।। ७४ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बाशक जी ने धीर बंधाया । पति पूजन का भेद बताया ।।
पति का आज्ञा सब कुछ जानो । जब तक प्राण रहें यही मानो ।।
आज्ञा उलंघन कभी न करना । कह के गये हैं यहीं पे रहना ।।
मैं भी कभी कभी आऊंगा । तुमरी मात को संग लाऊँगा ।।
जो कछु चाहिए मुख से कहा । शंका कभी नहीं तुम करना ।।
सुनो पिताजी बात हमारी । कछु नहीं चाहिए सुन ली तुम्हारी ।।
तुम दर्शन कभी देते रहना । माता को सब बतियाँ कहना ।।
शिव पूजा मैं ध्यान हमारा । वो ही है मेरा अटल सहारा ।।
आप कभी नहीं चिन्ता करना । मिल गया नाथ अब काहे डरना ।।

दोहा - बाशक जी सर हाथ धर, अहिला को समझाय ।
सेवक गण से बात कर, धीरज दे बतलाय ।। क ।।
भीड़ पड़े पर याद कर, तुरन्त लियो बुलवाय ।
मैं जाऊँ अब नागलोक को, दीजो संदेश भिजवाय ।। ७५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती बन मांही घूमे । गावे गीत मगन मन झूमे ।।

पेड़ों पर चढ़ चढ़ कर बोले । सेवक नागदेव संग डोले ।।
कभी इस पेड़ कभी उस डाली । शिव भक्ति में फिरे मतवाली ।।
भीम के पद चीन्ह पास रहत हैं । देख कभी आँसू भी बहत हैं ।।
जब चिन्तित हो राज कुमारी । दौड़ के आवें पहरेदारी ।।
मन मोहनी वे राग सुनावें । अहिलवती का मन बहलावें ।।
सुबह शाम नित पूजा करके । झरने का जल कलश में भरके ।।
अपने पति का पद चिह्न धोवे । चरणामृत ले राजी होवे ।।

दोहा - डूंडा राक्षस आय कर, धरयो भीम को रुप ।
जहाँ अहिला पूजा करे थी, बैठ गयो बन भूप ।। क ।।
अहिला ध्यान में मगन थी, बैठी शिव दरबार ।
आँख खुली जब सामने, ये कैसा संसार ।। ७६ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मैं आ गयो हूँ मेरी रानी । बहुरुपी ने कह दी बानी ।।
अहिला सोच समझ नहीं पाई । अपनी नजर को एक टक लाई ।।
बोले नहीं कछु मुख से उच्चारे । देख खड़ी हो मन में बिचारे ।।
बहुरुपी ने कदम बढ़ाया । अहिला पांव को पीछे हटाया ।।
कहता रानी और वाहा वाहा । हाथ पकड़ना जब वो चाहा ।।
अग्नि प्रगट हुई एक पल में । उमटी लपटे सन्मुख थल में ।।
राक्षस अपना रुप बनाया । अग्नि की पलटों में वह आया ।।
राख बना दई उसकी काया । अहिला के तब समझ में आया ।।
घोरी राक्षसी भागी आई । अग्नि उसे भी भस्म बनाई ।।
सेवक देंखे ये सब माया । करनी का फल पल में पाया ।।

अहिला शिव मण्डप पर आई । अग्नि लुप्त होय मुस्काई ।।

दोहा - सेवक गण खड़े पास में, नाचें उछलें मौज ।
सती धर्म से भिड़ कर पागल, अपना मिटाया खोज ।। क ।।
अहिला को धीरज दिया, लाये फल और मेव ।
खाओ दुलारी सीता फल की, लाल गुलाबी सेव ।। ७७ ।।

।। श्री श्याम देव जी का अवतार लेना ।।

।। भजन ।।

(तर्ज - धमाल)

माता अहिलवती क आँगणिय मँ, श्याम लियो अवतार ।। माता.....
धरती झूमैं अम्बर झूमै, झूम उठ्यो संसार ।। टेर ।। माता.....
भीमबली को पुत्र लाडलो, पाण्डव कुल को उजियारो,
निर्बल को बल, निर्धन को धन, सबकी पत राखन हारो,
दीनदयाल दया को सागर, करुणा को भण्डार ।। १ ।। माता.....

घुँघर वाला बाल श्याम का, रुप सलौनो प्यारो है,
दो नैना अमृत का प्याला, मुखड़ो जादूगारो है,
लुण राई कर श्याम लला की, लेवाँ नजर उतार ।। २ ।। माता.....

शंख नगाड़ा बजे गगन में, देव पुष्प बरसावें है,
बर्बरीक नाम रख्यो बालक को, नारद भेद बतावै है,
हे माता तेरो लाल करेगो, दुनियाँ को उपकार, ।। ३ ।। माता.....

घर-घर बाँटो आज मिठाई, ऐसो शुभ दिन आयो है,
सोने रो सूरज उग आयो, मन मँ हरष सवायो है,
झूमों नाचो खुशी मनावो, गावो मंगलाचार ।। ४ ।। माता.....

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती शिव पूजा करके । भोग लगावे मेवा धरके ।।
आश औलाद की इक अभिलाषा । दिन प्रतिदिन बढ़ती है आशा ।।
आयी शुभ घड़ी वो पल सोहना । प्रगट हुआ एक बालक मोहना ।।
अहिलवती के नैनों का तारा । उदय हुआ ममता का उजारा ।।
प्रगट होत बलवान हो गया । ममता के आँचल में खो गया ।।
भुज विशाल और नेत्र लाल हैं : चमकीले घूँघराले बाल हैं ।।
मोहना मुखड़ा तेज चमकता । माता के प्रति स्नेह झलकता ।।
गम्भीर चेहरे पे लाली चमके । केश भंवर रंग लट खा दमके ।।
मुख पे नसिका शोभा दायक । अधर सुहाने सत के पायक ।।
वस्त्र हैं पहने आज्ञा पाकर । चरण लिपट गया शीश नवाकर ।।
देवन आकर शंख बजाये । बांध कतार विमान सजाये ।।
नारद प्रगट हुए उस पल में । स्वर्ग लोक से मृत्यु थल में ।।
अहिलवती ने शीश नवाकर । प्रणाम करी मुनी पास में जाकर ।।
अहिलवती का लाला आया । मुनी चरणों में शीश नवाया ।।
नारद ने आशीष दिया है । बर्बरीक मुख से नाम लिया है ।।
यही नाम मेरे मन भाया । अहिलवती ने भेद बताया ।।
गुरु मंत्रणां देवो देवा । ब्रह्मदेव की करुँगी सेवा ।।
बोले नारद धीरज बाणी । सत्य कहती हो हे क्षत्राणी ।।
ब्राह्मण गुरु जगत के होते । हर प्राणी के पाप को धोते ।।
स्नान करो हे बालक जाओ । शीघ्र शिवालय मांही आओ ।।
बर्बरीक स्नान करने को धाये । नारद अहिला शिवालय आये ।।

दोहा - नारद जी कहने लगे, कौरव कपट की जात ।
पाण्डु हार गये जूए में, लगी नहीं एक स्यात ।। क ।।
बारह वर्ष बनवास में, रहेंगे पाण्डु लोग ।
एक साल अज्ञात वास में, धरेंगे कोई जोग ।। ७८ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती ये वानी सुनकर । पड़ी धरणी तिवाला खाकर ।।
नारद जी ने होश कराया । ज्ञान दिया और धीर बंधाया ।।
बर्बरीक झरने पर आया । देखा झरना मन हरषाया ।।
झरने पास खड़ा है लाला । देख रहा जल को मतवाला ।।
नहाने की जब चित में आई । जल की धारा अति सुहाई ।।
खोले वस्त्र तब महाबली ने । सुन्दरता का छवि छली ने ।।
भुजा चमकती सूर्य किरण संग । शरमाई प्रकृति देख रंग ।।
बदन से किरणां खिल खिल लहरे । सूरज किरण संग उलझ के सहरे ।।
झरना भी अति मगन हो गया । देखा बालक स्वर को खो गया ।।
जब जल बदन पे गिरता आकर । आलिंगन कर मन ललचा कर ।।
जल की बूँद बदन पे चमके । मानो मोती दम दम दमके ।।
मल मल खूब स्नान किया है । बड़ी देर आनन्द लिया है ।।
झरने की जल धार पकड़ने । बाहों से अति जोर जकड़ने ।।
उछल रहे हैं मचल रहे हैं । जल में किलोल कर रहे हैं ।।
अहिला ने आवाज लगाई । बर्बरीक सुन दौड़ लगाई ।।
बीच शिवालय जल्दी आया । अहिलवती ने लाड़ लड़ाया ।।
बदन को पोंछा बाल संवारे । कहती जाती वाह रे दुलारे ।।
सिर पुचकार के गोदी चढ़ाया । नारद जी के पास बैठाया ।।
बोले नारद मीठी वाणी । सुनो अहिलवती हे क्षत्राणी ।।

शिवजी साक्षी इस बालक के । देव शक्ति धारी चालक के ।।
शिव शिव रटना इसे सिखाओ । मन वांछित फल निश्चय पाओ ।।
ये आशीष है अटल हमारा । महादानी हो लाल तुम्हारा ।।
यह तुमरी आज्ञा मानेगा । मात गुरु तुमको जानेगा ।।

दोहा - इतनी कह नारद चले, नारायण कह बोल ।
नाग देव खड़े पास में, मगन होय रहे डोल ।। क ।।
माँ बेटे ने हाथ जोड़, मुनि को करी प्रणाम ।
फूलों की वर्षी हुई, प्रगटे देव श्री श्याम ।। ७९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मेवा फल लाये पहरेदारी । लाकर भेट करें मनवारी ।।
पहले शिव के भोग लगाया । कर विनती चरणामृत पाया ।।
अहिलवती ने थाल सजाया । लाले को फिर पास बिठाया ।।
अपने हाथों से मेवा खिलावे । निर्मल जल झरने का पिलावे ।।
अहिलवती दे ग्रास हाथ से । खावे माँ और बेटा साथ में ।।
बर्बरीक जो भी फरमावै । अहिलवती वही मेवा खिलावै ।।
बोले लाला मधुरी बोली । अहिलवती ने भरली कोली ।।
तृप्ति भर फल मेवा खाये । वन में गमन को वो उठ धाये ।।
चलें बात बतलाते जावें । माता जी सब भेद बतावें ।।
गरजा शेर कहीं दूरी पर । गूँजा बन उपवन भूरि पर ।।
बोला लाला ये क्या बोला । जंगल भी थर थर कर डोला ।।

दोहा - अहिलवती समझाय कर, भेद दिया बतलाय ।
बन में रहते कई जानवर, लाले को समझाय ।। क ।।
ये नौ हथा शेर है, करता जो आवाज ।
बोल बर्बरीक मैं पकड़ूँगा, इतनी कह गया भाग ।। ८० ।।